ISSN 2277 - 7865
Price : 50.00

तित्थयर

वर्ष : ३७ अंक : ०८ नवम्बर २०१३

॥ जैन भवन ॥

शुभ कामनाओं सहित —

जिसने दुःख को समाप्त कर दिया है उसे मोह नहीं,
जिसने मोह को मिटा दिया है उसे तृष्णा नहीं है।
जिसने तृष्णा का नाश कर दिया है उसके पास
कुछ भी परिग्रह नहीं है, वह अकिंचन है।

Nivesh Invest Pte. Ltd.

Mumbai-Singapore-Honkong-Shanghai

ISSN 2277 - 7865

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३७ | अंक - ८ नवम्बर | २०१३

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : (033) 2268-2655, 2272-9028,
Email : jainbhawan@rediffmail.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें --
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Life Membership : India : Rs. 5000.00. Yearly : 500.00
Foreign : $ 500

Published by Dr. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 006 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा
पी-एच.डी., डी.लिट्

Editorial Board :

1. Dr. Satyaranjan Banerjee
2. Dr. Sagarmal Jain
3. Dr. Lata Bothra
4. Dr. Jitendra B. Shah
5. Prof. Anupam Jash
6. Dr. Abhijit Bhattacharyya
7. Dr. Peter Flugel
8. Dr. Rajiv Dugar
9. Smt. Jasmine Dudhoria
10 Smt. Pushpa Boyd

दीपावली विशेषांक

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
अष्टापद साक्षात्		
एक प्रामाणिक सत्यान्वेषण	डॉ. लता बोथरा	३२१
अष्टापद चित्र संकलन	श्री अमित दोशी	
नदियों के उद्‌गम स्थल चित्र	डॉ. पी.एस. ठक्कर	

ISSN 2277 - 7865

कवरपृष्ठ : मंगोलिया से प्राप्त देवी सरस्वती का चित्र

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

वीर प्रभु के निर्वाण और गौतम के केवलज्ञान का दिन ये आया ।
वीर सम्वत् 2540 का ये नव वर्ष खुशियों का अम्बार लाया।
जिन संस्कृति की महक से जगत् में उल्लास छाया।
तीर्थंकरों की वाणी ने दसों दिशाओं को गुंजाया।
संस्कृति के आदि स्रोत की खोज में लुप्त अष्टापद को आज साक्षात् पाया।
कार्तिक पूर्णिमा पर यह संदेश दिलों में नयी उमंगे भर लाया।
दीप जलाऊँ, पुष्प चढ़ाऊँ, आरती का थाल सजाऊं यही मन में समाया।
चलो सब नर-नारी अष्टापद पर आदीश्वर बाबा ने हमें बुलाया।

तथाकथित अष्टापद पर्वत

नमन करती हूँ मैं आपको शत् शत् बार,
पार लगाना मुझे यही है विनती बारम्बार
पथ पर चल तुम्हारे तुमको पा जाऊं मैं
हे मुक्तिनाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर

—————— हे आदिनाथ।

ब्रह्म कमल की सौरभ से मुग्ध हो आगे चले सरोवर पार
नव पड़ाव पार कर पहुँचे अष्ट पर्वतों के द्वार
धन्य हो गयी मैं आपके दर्शनकर आज
हे सिद्धाचल स्वामी शत्रुंजयनाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर
——————— हे आदिनाथ।

सिद्धभूमि यहीं, संभाला यहीं और सांगरिला भी इसका एक नाम
ब्रह्मा, विष्णु, शिव, बुद्ध सब समा रहे हैं जिनमें,
आदीश्वर है उनकी पहचान,
देवी देवता भी आकर शीष झुका करते जिनको प्रणाम
ऐसी दिव्य रत्नों की प्रतिमा के दर्शन से आँखें हो गयी हैरान
भरत ने बनायी जिनकी द्युतिमय पाषाण प्रतिमा अति मूल्यवान
सूर्य की रोशनी भी फीकी पड़ी, रात्रि हुई प्रकाशमान्
हड़प्पा मोहनजोदड़ों की धारा प्रवाहित हुई यहीं से, बना ये तीर्थ महान
हे माणिक्य देव कुल्पाकनाथ विराज रहे है अष्टापद पर,
——— हे आदिनाथ

जहाँ के कण-कण से गुंजरित उनकी वाणी,
अष्टापद का हर पत्थर सुना रहा उनकी कहानी।
शीतल पवन की बयार से, खिल-खिलकर कह रहा जुबानी।
हे योगीराज, केसरियानाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर,
——— हे आदिनाथ

खोज रही अष्टापद को, ये आँखें वीरानी,
बिन दर्शन व्यर्थ है, यह जिन्दगानी,
आ रही हूँ मैं, हे आदिश्वर दादा, मेरी नैया तुमको तिरानी।
हे कल्याणकारी जगत् नाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर
————— हे आदिनाथ।

भोग-भूमि से कर्मभूमि में लाकर,
मानव को दिखाई उसकी पहचान।
अहिंसा धर्म का कर आह्वान्,
हे आदिश्वर बाबा बन गये युग पुरुष महान।
हे पालनहार, अमरेश्वरनाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर,
——— हे आदिनाथ

वेदो और पुराणों में, आता है जिनका नाम।
सीखा है हमने, उनसे ज्ञान,
जन-जन करते हैं जिनको प्रणाम,
सभी गाते हैं उनका गुणगान,
कहते हैं हम जिन्हें आदि भगवान,
हे दीननाथ, जगत के कर्णधार,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
——— हे आदिनाथ।

देकर आत्मज्ञान का पाठ, बन गए आप जगन्नाथ,
पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण,
चहुँ ओर फैला आपके ज्ञान का प्रकाश,
हे जीवनदाता, प्रकाशनाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर,
——— हे आदिनाथ।

नाभिराय मरुदेवी के नन्दन,
केसर, चन्दन, पुष्प चढ़ाती तुम्हारे चरणन्।
मैं-मेरा सब कुछ कर रही आपको अर्पण,
हे जगत् नन्दन, तारणनाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर।
——— हे आदिनाथ।

मेरा जनम् है तुम्हारा वरदान,
मांग रही हूँ तुमसे ये दान।
अष्टकर्म का यह जंजाल महान्,
उबारो मुझे, इससे दे मुक्ति का ज्ञान।
हे सच्चिदानंद, अर्हत् नाथ।
विराज रहे हैं अष्टापद पर।
——— हे आदिनाथ।

सिन्धु, सतलज, ब्रह्मपुत्र, सरस्वती की धारा,
लेकर आ रही अष्टापद से ये संदेश तुम्हारा,
दया, मैत्री, क्षमा और अहिंसा का,
पाठ पढ़ाकर किया कल्याण हमारा,
हे करुणासागर, दयानाथ, विराज रहे हैं अष्टापद पर,
——— हे आदिनाथ।

धरती गगन और सितारे, धूमिल सबकी चमक तुम्हारे आगे,
वन, उपवन, खग, विहग, चहके सारे,
जहाँ जहाँ चरण पड़े तुम्हारे,
हे पालन हार आदीश्वरनाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
——— हे आदिनाथ।

चहुँ दिशाओं में शोर मचा, बाबा के नाम का ढोल बजा,
तज दिया इस झूठी दुनियां का मजा,
बस पाना है तुमको अब यही रज़ा,
हे कर्णधार, दुनिया जहाँ के नाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
——— हे आदिनाथ।

छोड़ दिया संसार बन बैरागी, माँ की ममता भी त्यागी,
सुन तुम्हारी कथा मैं भी अब जागी,
रचाऊँगी मन मंदिर में तुम्हारी सुन्दर आंगी,
आत्मसात् कर रही मैं, तुम्हारी दीप्त वाणी,
हे मरु नंदन, बैरागी नाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
———— हे आदिनाथ।

जीवन मरण की डगर पर खड़ी हूँ,
बस एक ही चाह लिये पड़ी हूँ,
कब आएंगी आपके दर्शन की घड़ी,
कहीं टूट न जाएं जीवन की यह कड़ी,
हे सर्वेश्वर, जीवननाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
———— हे आदिनाथ।

बड़ी दूर से आयी करने तुम्हारे वन्दन,
बेताब मन में हो रहा स्पन्दन,
तेरे द्वार पर खड़ी हे मरुनंदन,
अब तो दे दो मुझे दर्शन
हे करुणा नंदन, ज्ञान नाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
———— हे आदिनाथ।

अष्टापद अब है जाने की बारी
प्रभु दर्शन को प्यासी ये आंखें है विरानी,
अपने कर्म खपाने की अब हो चुकी तैयारी,
मुक्ति के पथ का ये सफर है जारी,
हे देवाधिपति, अनाथों के नाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
———— हे आदिनाथ।

© डॉ. अमितजी दोशी
डॉ. लता बोथरा (सम्पादक, तित्थयर)

प्रस्तुत शोधग्रन्थ में उपयोग में लाए हुए सारे चित्र डॉ. अमितजी दोशी के नाम पर सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इस ग्रन्थ के किसी भी अंश या आलोकचित्र का बिना अनुमति के प्रकाशित करना, तकनीकी उपयोग करना या अनुप्रक्रिया से बदलना सर्वथा वर्जित है। उपरोक्त नियम के अन्यथा होने पर सख्त कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

आलोच्य शोध कई बुनियादी तथा आधारभूत स्थापनाओं पर आलोकपात करता है। इस ग्रन्थ में जो शोधपरक तथ्य दिए गए हैं- वे डॉ. अमितजी दोशी के साक्षात्कार, दिए तथ्यों तथा आलोकचित्रों पर आधारित हैं। इस दिशा में पुरातात्त्विक तथा ऐतिहासिक – दोनों स्तरों पर गम्भीर शोधकार्य जारी है। जैसे-जैसे हमें और भी प्रामाणिक तथ्य मिलते जाएँगे, वैसे-वैसे प्रबुद्ध पाठकवर्ग तथा विद्वत्समाज को इस पर अगली जानकारी दी जाएगी।

डॉ. लता बोथरा

अष्टापद साक्षात्
एक प्रामाणिक सत्यान्वेषण

सृष्टि के आरम्भ से ही आदि संस्कृति की जो धारा निरन्तर प्रवाहित हो रही है उसका अस्तित्व आज जैन धर्म के रूप में देखने को मिलता है। जैन शब्द सातवीं शताब्दी से व्यवहार में आया। उससे पूर्व यह व्रात्य, श्रमण, निर्ग्रन्थ आदि नामों से प्रचलित था। इसी परम्परा में चौबीस तीर्थंकर समय-समय पर हुए जिन्होंने अपने ज्ञान के प्रकाश से मानव सभ्यता को विकास पथ पर अग्रसर किया। इसीलिए इनकी कल्याणक भूमियाँ तीर्थ मानी गई हैं। कल्याणक भूमियों में भी निर्वाण कल्याणक भूमि की महत्ता ज्यादा मानी जाती है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का वर्णन विश्व के प्राचीनतम साहित्य वेद, पुराण आदि में एवं सभी प्राचीन संस्कृतियों में उनकी उपासना के प्रमाण प्रचुर मिलते हैं, जो सिर्फ उनके अस्तित्व के प्राचीन साक्ष्य ही नहीं देते वरन् सभ्य समाज के निर्माण में उनकी भूमिका की भी पुष्टि करते हैं।

जिस प्रकार जैन परम्परा प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से ही मानव सभ्यता के विकास का प्रारम्भ मानती है, उसी प्रकार अन्य सभी परम्पराओं में भी यहीं मान्यता कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं अप्रत्यक्ष रूप से स्थापित है। अतः यह निर्विवाद है कि मानव सभ्यता और संस्कृति के आदि जनक ऋषभदेव थे।

इस विषय में Dr. Stella Gerdner ने लिखा है—

The ancient rhythm of history have been vibrant

enough to focus enough light on Jainism, As Risabh or Brisabh as he is generally known has been one of the most remarkable historical person of all times. It was he who changed the forms of society as more scientific one than it was in its primitive stage.

प्रो.वी. जी नायर जो शान्तिनिकेतन से जुड़े थे और सिनोइण्डियन कल्चर सोसाइटी के सह सचिव रहे हैं उन्होंने एशिया की संस्कृति के ऊपर करीब पच्चीस किताबें और दो हजार लेख लिखे हैं। उनके अनुसार—

After my continuous studies on the origin and development of world culture, I was convinced that Lord Rishabha was the first religious teacher, ruler, reformer as well as law maker in the history of mankind... Rishabha is also extolled in the Vedas as the Almighty God. There are devotional hymns in the Vedas as well as in some Puranas in adoration of Rishabha. In the Buddhist scriptures also could be found references about Rishabha as the early Buddha. The author of Tirukkural, the Tamil Veda extols Rishabha as Adi Bhagawan the first Lord and the first omniscient teacher of Mankind.

--- Adi Bhagawan Rishabh

Heinrich Zimmer, Major Furlong एवं अनेक भारतीय इतिहासकारों ने भी ऋषभदेव के अस्तित्व को स्वीकार किया है। आदि तीर्थंकर ऋषभदेव एवं उनके निर्वाण स्थल अष्टापद का वर्णन जैन साहित्यिक ग्रन्थों कल्पसूत्र, आवश्यक सूत्र, आचारांग

निर्युक्ति, आवश्यक निर्युक्ति, आदिपुराण, हरिवंशपुराण, पउमचरिउ, त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र, शत्रुंजय माहात्म्य, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, तिलोयपण्णति, वसुदेव हिंडी और उत्तर पुराण आदि अनेक ग्रन्थों में मिलता है।

इस सृष्टि के सभी प्राणियों में मनुष्य ही एक जिज्ञासु प्राणी है तथा नई-नई खोजों की जिज्ञासा ही उसे अपने अतीत के इतिहास में झाँकने के लिए प्रेरित करती है। आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के निर्वाण स्थल अष्टापद के विषय में यह कहा जाता कि यह तीर्थ लुप्त हो गया। साहित्यिक तौर पर हमारे पास पर्याप्त प्रमाण होते हुए भी वास्तविक धरातल पर इस तीर्थ को खोजने का कार्य अत्यन्त दुष्कर था। जैन दर्शन के अध्ययन के समय अष्टापद का कैलाश के रूप में वर्णन मिला जो अष्टापद की खोज में एक नई दिशा दे गया। इस बीच श्री भरतहंसराज शाह द्वारा लिए कैलाश के चित्र मुझे कोबा में बालाजी साहब द्वारा देखने को मिले, जिन्होंने मुझे आकर्षित किया। फलस्वरूप मैंने सन् 1999 में **संस्कृति का आदि स्रोत** शीर्षक के अन्तर्गत मासिक पत्रिका तित्थयर में अष्टापद कैलाश के विषय में कुछ महत्वपूर्ण शोध लेख एवं चित्रों को दिया। सन् 2003 में डॉ. रजनीभाई शाह से सम्पर्क हुआ। वे भी अष्टापद की खोज में लगे हुए थे। सन् 2005 में मैंने 'ऋषभदेव और अष्टापद' नामक एक ग्रन्थ निकाला जिसमें वेदों और पुराणों के अलावा विभिन्न धर्मों में कैलाश और ऋषभदेव सम्बन्धी विभिन्न तथ्यों को एकत्रित कर लिखा गया था। इसमें पाश्चात्य विद्वानों और उनके अनुभवों को भी संकलित किया गया। सन् 2006 में हमने कैलाश मानसरोवर की यात्रा की, जहाँ अष्टापद की खोज ही हमारा मुख्य ध्येय था। तिब्बत के बड़े-बड़े

बौद्ध विहारों में हम गये परन्तु अष्टापद की खोज अभी भी अधूरी थी। संभावनाएं दिख रही थी परन्तु दिशा नहीं समझ पा रहे थे। उसके बाद इस विषय पर अनेक जगहों पर सेमिनार भी आयोजित किए गये। समाज में अष्टापद के विषय में जागरुकता लाने का प्रयत्न भी करते रहे। इसी क्रम में फरवरी सन् 2013 में अहमदाबाद के संगोष्ठी में अष्टापद के संदर्भ में कुछ नए पहलू भी सामने आए और हमारे संगठन में देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक लोग भी जुड़े। सम्बन्धित खोजों एवं जानकारियों से यह तथ्य सामने आया कि जैन तीर्थंकरों का प्रभाव सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में था। 'चौबीस तीर्थंकर पुरासाक्ष्यों एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में' इस लेख में तीर्थंकरों की ऐतिहासिकता पर अनेक प्रमाण दिये हैं। अष्टापद की खोज आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के निर्वाण स्थल ही नहीं वरन् तीर्थंकरों की प्रामाणिकता का भी एक ज्वलन्त प्रमाण होगा ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास था।

आज हम हमारी अष्टापद की खोज के उस पड़ाव पर पहुँच चुके हैं कि ऐसा लगने लगा है कि मंजिल सामने है केवल हाथ बढ़ाने की देर है। आवश्यकता है सिर्फ पुरुषार्थ और परिश्रम की। यह हमारी श्रद्धा, विश्वास तथा पुरुषार्थ का प्रभाव था कि हमें आदि तीर्थंकर ऋषभदेव की निर्वाण भूमि अष्टापद से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए जो इस तीर्थ के अस्तित्व को प्रमाणित तो करेंगे ही साथ ही मानव संस्कृति के इतिहास के आदि स्वरूप का भी दिग्दर्शन करायेंगे। जैन तीर्थंकर ऋषभदेव का निर्वाण स्थल अष्टापद को कैलाश नाम जैनाचार्यों द्वारा दिया गया। विविध तीर्थकल्प, त्रिशष्टीशलाकापुरुष चरित्र, आदिपुराण आदि में यह वर्णन मिलता है। कैलाश तिब्बत में स्थित है, जो आज चीन के अधिकार में है।

प्राचीन समय में तिब्बत अविभाज्य भारत का ही अंग था। मुगलकाल के ये नक्शे इसके पुष्ट प्रमाण हैं कि मुगलकालीन भारत में तिब्बत भारत का अभिन्न हिस्सा था।

कैलाश तिब्बत में अवस्थित है। अतः तिब्बत की भौगोलिक परिस्थिति की जानकारी भी आवश्यक है। तिब्बत में पर्वत श्रृंखलाओं की तीन प्रमुख श्रेणियाँ हैं। लाखों वर्ष पूर्व भारत अफ्रीका से जुड़ा हुआ था। धीरे-धीरे यह टुकड़ा अफ्रीका से अलग होकर तिब्बत के दक्षिण में जहाँ टेथिस नामक सागर था वहाँ तिब्बत से जुड़ गया। परिणामस्वरूप वहाँ से जो पर्वत श्रृंखला समुद्र से निकली उसका नाम हिमालय पड़ा। इस हिमालय में ऐवरेस्ट, कंचनजंघा, अन्नपूर्णा आदि ऊँचे-ऊँचे बर्फीले पहाड़ हैं जो बर्फ से सदा ढके रहते हैं। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गोमुख आदि पवित्र तीर्थ इसी हिमालय में पड़ते हैं।

तिब्बत में पर्वत की दूसरी महत्वपूर्ण श्रृंखला है गंगपहाड़ों की। कैलाश पर्वत इसी श्रृंखला में होने के कारण इसे कैलाश श्रृंखला भी कहते हैं। प्रसिद्ध सिन्धु नदी जो प्राचीनतम सभ्यताओं की जन्मदात्री मानी जाती हैं, इसी गंग पहाड़ी से निकली है। यही

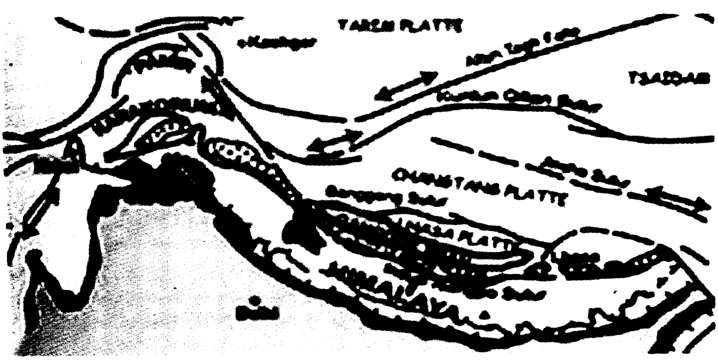

पश्चिमी तिब्बत की पर्वत श्रृंखलाएं

Hondiu's map of Mogol empire, 1625

हॉन्डिउ द्वारा निर्मित मुगल साम्राज्य का मानचित्र (1625)

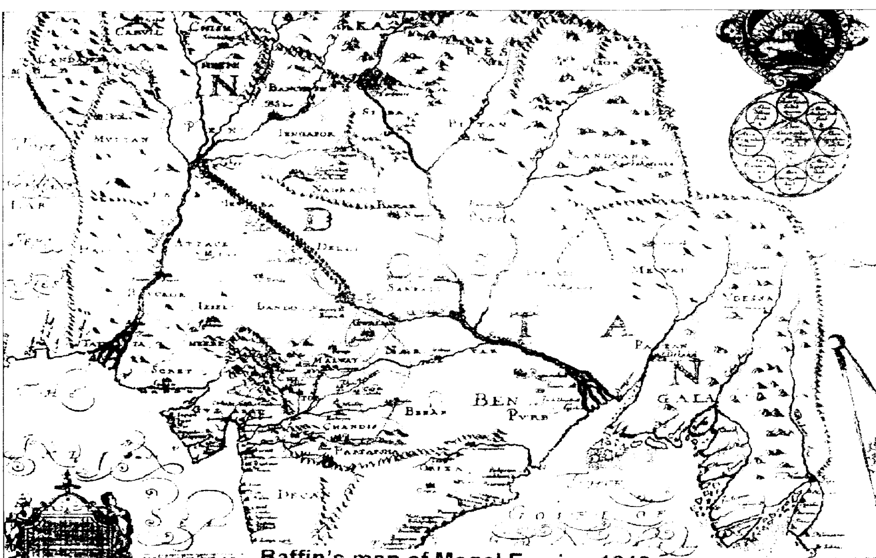

Baffin's map of Mogol Empire, 1619

Baffin's map of the Mogol Empire, 1619
(Reproduced by kind permission of the British Library)

Ref: Early maps of India, by Susan Gole, 1976
For Sanskriti in association with Arnold
Hentanian publishers pvt.Ltd. of India

बैफिन द्वारा निर्मित मुगल साम्राज्य (1619)

आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता नाभि और मरुदेवी का स्थान था। नाभि के नाम से ही इस क्षेत्र को नाभिखंड या अजनाभवर्ष कहा जाता था। तीसरी महत्वपूर्ण शृंखला है कुनलुन पर्वत शृंखला, जो तिब्बत और चीन की सीमा पर है। कुनलुन और गंग पर्वतों की शृंखला हिमालयी शृंखला से भी प्राचीन मानी जाती है।

वर्तमान समय में तिब्बत के भूगोल को समझने के लिए पण्डित नैन सिंह और स्वेन हेडेन का बहुत बड़ा योगदान रहा है। स्वेन हेडेन द्वारा बनाया गया तिब्बत का नक्शा बहुत महत्वपूर्ण है।

The first modern map of Tibet was published by the Royal Geographical Society in 1906. Pandit Nain Singh (1867) and Kishen Singh, alongwith Sven Hedin made the greatest contribution to our geographical knowledge of Western Tibet in the 20th century.

गंग पर्वत शृंखला में कैलाश सबसे पवित्र स्थान माना जाता है क्योंकि कैलाश पर्वत शृंखला में अष्टापद पर्वत है। अतः अष्टापद का अपरनाम कैलाश जैन साहित्य में लिखा मिलता है।

प्रसिद्ध भूगर्भ विशेषज्ञ मेडलीकर, ब्लैन्फर्ड और लैम्पबर्फ ने तिब्बत को आदिमानव का मूल स्थान माना है। नाइजीरिया के जिऑलोजी के प्रो. एल वी हौलस्टीड मानवीय सभ्यता का उद्‌गम तिब्बत से मानते हैं। पार्जिटर महोदय के अनुसार कैलाश के निकट ही मानव सभ्यता का प्रारम्भ हुआ था। यह क्षेत्र अनेक नामों से जाना जाता है। It has been called the forbidden land, the land of white waters.... the land of radiant spirits, the land of living fire, the land of living Gods and the land of wonders. The Hindus have known it as Aryavarta, the land

from which the Vedas come, The Chinese like Hsi Tien the Western paradise of Hsi Wang Mu, the royal mother of the West, the Russian old believers, a 19th century Christian sect. knew it as Belovody and the Kirghiz people as Janaider. But throughout Asia it is best known by its Sanskrit name Shambhala, the place of peace, of tranquility or as Chanbhala (may be from its lying in the Chang Tang mountain). At the end of his life Lao-Tzu the propagator of Taoism in China returned to Shambhala although he called it Tebu Land.

कहते हैं जहाँ चाह होती है वहाँ राह मिल जाती है और वहीं हुआ। गत् चौदह वर्षों से हमलोग जिस अष्टापद की खोज में लगे हुए थे उसके विषय में एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी हमें श्री अमित भाई दोशी से मिली जिन्होंने अष्टापद के रहस्य को उजागर कर मानव संस्कृति के आदि स्रोत तक पहुँचने का रास्ता हमें दिखाया। उन्होंने सिर्फ हमें अष्टापद से परिचित ही नहीं कराया वरन् प्रमाण स्वरूप वहाँ उनके द्वारा कैमरे से लिये गये चित्रों का भी दिग्दर्शन कराकर एक प्रबल प्रमाण प्रस्तुत किया।

इक्कीस वर्ष की उम्र में वे घर से निकलकर हिमालय में चले गये थे। उस समय उनके पास न कोई जानकारी थी, और न ही धन। सर्वप्रथम उन्होंने देहरादून तथा चारधाम की यात्रा की। संयोगवश कुछ जैन साधुओं से वे मिले और उनके साथ ही बिना वीसा के ही तेइस वर्ष की आयु में वे सिद्धाश्रम पहुँचे तथा वहाँ कई वर्षों तक रहे। वहीं से उन्होंने अष्टापद की यात्रा की। वहाँ जो भी उन्होंने देखा उसके चित्र लिए। उनके अनुसार सिद्धाश्रम

मानसरोवर और कैलाश के उत्तर पूर्व में स्थित है। वहाँ हिन्दू योगी, जैन साधु तथा बौद्ध लामा लोग रहते हैं। वहाँ पर एक पुस्तकालय भी है जिसकी देखभाल जैन मुनि करते हैं। सिद्धाश्रम पहुँचने के बाद आगे अष्टापद पहाड़ की यात्रा के लिए तैयारी करनी पड़ती है। अष्टापद पहाड़ पर जाने के लिए नौ पड़ाव पार करने पड़ते हैं। इन पड़ावों को पार करने का ज्ञान हमें सिद्धाश्रम से प्राप्त करना पड़ता है। अष्टापद के एक तरफ सिद्धाश्रम है और दूसरी तरफ सम्भाला या सांगरिला स्थित है। यहाँ के लोग अष्टापद की सुरक्षा करते हैं तथा एक ऐसा अभेद्य कवच इस क्षेत्र में बना हुआ है जिसमें बाहर के लोग हवाई जहाज से या वैज्ञानिक उपकरणों से इसे भेद नहीं सकते। आध्यात्मिक स्तर पर ही नहीं वैज्ञानिक तकनीक में भी ये लोग बहुत विकसित हैं। वहाँ के योगी अन्तरिक्ष के और ग्रहों में भी आबाध रूप से जा सकते हैं।

श्री अमित दोशीजी वहाँ से वापस आने के बाद अपना अध्ययन पूर्ण कर जीवन के कर्मक्षेत्र में लग गये। उसके बाद उन्होंने दो बार और वहाँ की यात्रा की। आज तक जिसे हम रहस्यमय और अपनी पहुँच के बाहर समझते थे, उसके जो प्रमाण मिल रहे हैं उसका साहित्यिक उल्लेखों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने से जो निष्कर्ष निकले हैं वह मैं आपके समक्ष रख रही हूँ।

(1) श्री अमित भाई के अनुसार यह जगह तिब्बत में है तथा कैलाश मानसरोवर के उत्तर पूर्व में पड़ता है। महाभारत में भी कैलाश के उत्तर में सिद्ध आत्माओं का निवास कहा गया है। भारतीय योगी स्वामी विशुद्धानन्दजी, डॉ. नारायण दत्त श्रीमालीजी, दादा मुनिश्वर वशिष्ठजी आदि अनेक योगियों ने भी कैलाश के उत्तर पूर्व में सिद्ध भूमि होने का उल्लेख किया है। हठयोग प्रदीपिका के प्रथम उपदेश

में उल्लिखित योगियों की सूची में सबसे प्रथम नाम आदिनाथ का मिलता है। तमिल ग्रन्थ चूड़ामणि निघण्टू के पद्य में सिद्ध आत्माओं की आठ विशेषताओं का वर्णन मिलता है जो जैन परम्परा की तरह

पार्श्वनाथ (रत्नप्रतिमा)
तथाकथित अष्टापद गुफा

ऋषभदेव
तथाकथित अष्टापद पहाड़

हैं। ये आठ विशेषताएं हैं-- अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतलब्धी, अनंतसुख, अक्षयस्थिति, वीतरागता, अरूपता और अपरिवर्तनशीलता। यही सिद्ध आत्माओं के लक्षण हैं।

(2) अष्टापद शब्द के विद्वानों ने भिन्न-भिन्न अर्थ बताये हैं परन्तु श्री अमित भाई के अनुसार यह आठ पहाड़ियों का समूह हैं। जिस पहाड़ी पर प्रातः सबसे पूर्व सूर्य की किरणें पड़ती हैं वहीं अष्टापद है। जैन साहित्यानुसार सूर्य की किरणों का अनुसरण करते हुए गौतम स्वामी अष्टापद पर्वत पर पहुँचे थे और चार, आठ, दस, दो के क्रम से जिन (तीर्थंकर) प्रतिमाओं की वन्दना की थी। इस प्रकार अष्टापद आठ सीढ़ियां न होकर आठ पहाड़ियाँ हैं।

तथाकथित अष्टापद पर्वत पर उगता सूरज

(3) अष्टापद पहाड़ी के एक तरफ सम्भाला और सांगरिला है और दूसरी तरफ सिद्धाश्रम और ज्ञानगंज अवस्थित है— जैसे अष्टापद शब्द के कई अर्थ हैं उसी प्रकार यह क्षेत्र भी विभिन्न नामों

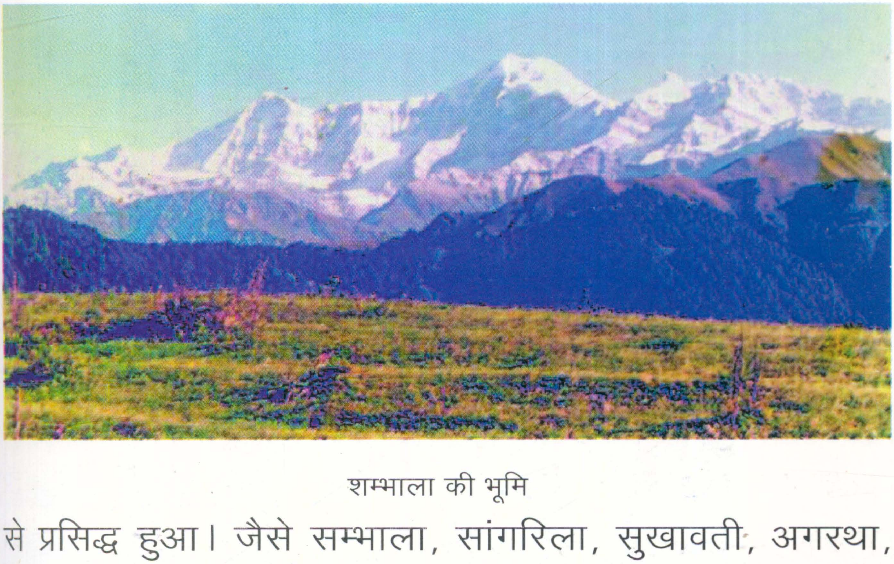

शम्भाला की भूमि

से प्रसिद्ध हुआ। जैसे सम्भाला, सांगरिला, सुखावती, अगरथा, सिद्धाश्रम, ज्ञानगंज, सच्चखण्ड और अमरपुरी आदि। अभी तक सबसे प्राचीन नाम जो साहित्य में मिलता है वह अष्टापद है।

शास्त्रों में तीर्थंकरों की निर्वाण स्थलों का बहुत ही स्पष्ट उल्लेख मिलता है—

अष्टापद श्री आदि जिनवर, वीर जिन पावापुरी।
वासपूज्य चंपानगरी, नेमिरेवा गिरिवरम्।
श्री सम्मेत शिखरे बीस जिनवर मुक्ति पहुँचा मुनिवरम्।
चौबीस जिनवर नित्य बन्धु, सकल सृजल सुखकरम।

बौद्धों में इसे सम्भाला कहते हैं जिसका अर्थ है– शांति और विश्राम का स्थल। सम्भाला शब्द 9वीं शताब्दी में भारत से तिब्बत गया था। इस विषय में अनेक आख्यान भी मिलते हैं। सम्भाला के विषय में कहा जाता है कि– It is in the form of an 8 ringed,

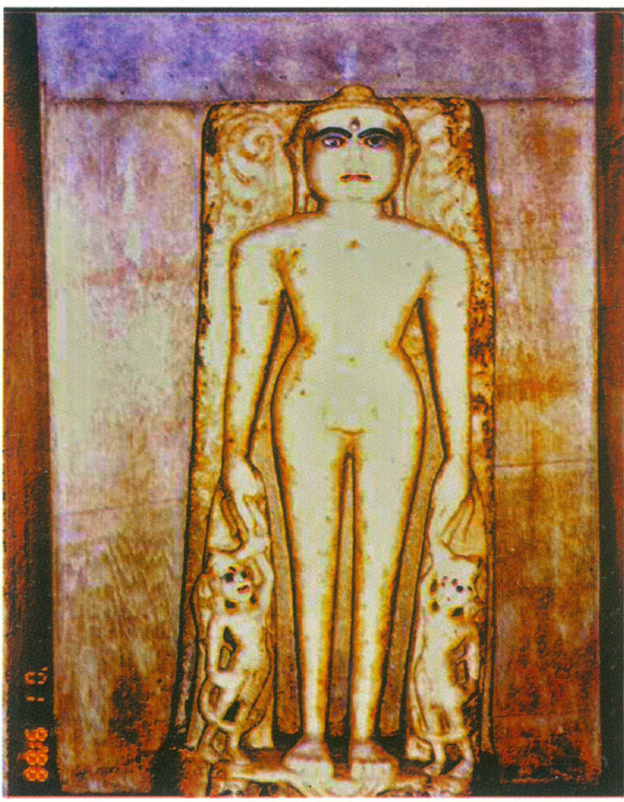

शम्भाला की गुफा में रक्षित जैन तीर्थंकर की संगमर्मर की मूर्ति

eight Petalled Lotus where each region is enclosed by a boundary of mountain. In the centre of it is Kalpa, the capital of the kingdom of Agharta. Located about South of Kalpa is a Sandalwood forest Spanning about 12 yojan. East of Kalpa is lesser Manasa Lake spanning about 12 yojan. On the West is white lotus lake. In the middle of the park is great Kal chakrá mandal 12 yojan. It is square in shape. Legend says that only the pure at heart can live in Shambhala enjoying perfect ease and happiness and never knowing suffering. Injustice in unknown. The habitants are long lived, were beautiful and perfect bodies and possess spiritual power. Their technology level highly advanced.

Hungarian wanderer--scholar Csoma de Koros writes about Shambhala-- I learned grammatically the language and became acquainted with many literary treasures shut up in 320 large printed volumes which are the basis of all Tibetan learning and religion. Included in these finds was set of commentaries known as Tangyur which was comprised of 224 volumes with a total of 76409 leaves. Tucked away in these volumes Csoma wrote, were 18 leaves which contained passports for such pious men who desire to visit Kalpa in Shambhala. Apparently these passports also contained direction to Shambhala. इस जगह के बारे में उनको विश्वास था कि यह हंगेरियन जाति का प्राचीन पैतृक निवास है।

हिटलर ने जर्मनी के प्राचीन साहित्य में नॉर्वे के प्राचीन लोकदेवता ओडीन (Odin) के वर्णनों को देखकर उनके मूल स्थान की खोज में अपनी एक टीम Heinrich Himmler और Rudolf Hess के नेतृत्व में तिब्बत सन् 1934-35, 1938-39 ई. में भेजी थी लेकिन वह असफल रही। उसने स्वस्तिक प्रतीक को अपनाया, क्योंकि स्वस्तिक नॉर्स (नॉर्वे के) देवता ओडीन का प्रतीक माना जाता है। Swastik is also a traditional symbol of the old Norse God of Thunder and might (Scandinavian Thor, German Donner, Baltic Perkunas). Because of this association with the God of Thunder, the Latvians and Finnish both took the Swastika as the insignia for their forces when they got independence after Ist World War. स्वस्तिक संस्कृत का शब्द था इसलिए हिटलर की Thule society ने स्वस्तिक को Haken Kreuz के नाम से अपनाया। स्वस्तिक की अवधारणा का मूल केन्द्र अष्टापद पर भरत चक्रवर्ती द्वारा बनाये मंदिर हैं जो स्वस्तिक आकार में थे।

James George ने 'Searching for Shambhala' में Lama Lobsang Rampa की किताब 'The Third Eye' और 'The Caves of Ancient' में, Edwin Bernbaum की 'The Way of Shambhala', James George की 'Searching for Shambhala', तथा Jason Jaffrey द्वारा लिखित 'Mystery of Shambhala', Rene Gueron की 'The Lord of the World', तथा Madame Blavatsky जो भारत में थयोसोफिकल सोसायटी की अन्यतम प्रमुख नेत्री थी और Nicholas Roerich ने 'Shambhala-Search of The New Era' में सम्भाला का वर्णन किया हैं।

सम्भाला के विषय में 9वीं शताब्दी के एक चीनी दस्तावेज में लिखा है कि–It was the center of sky, the middle of the earth and the heart of the country, an enclosure of glacier, the head of all the rivers, high mountain, pure earth, an excellent country. A place where wise men are born heroes, where custom is perfected, where horse grow swift. (This account taken from chinese historical sources from the documents of Touen-Houang).

तिब्बत के बौद्ध लामाओं का मानना है कि सम्भाला एक रहस्यमय साम्राज्य है जो तिब्बत के उत्तर में बर्फीली पहाड़ियों के पीछे अवस्थित है जहाँ बौद्धों का पवित्र उपदेश और कालचक्र का सिद्धान्त सुरक्षित रखा गया है। उनके अनुसार सम्भाला में 32 राजाओं का शासन चलेगा और प्रत्येक राजा का शासनकाल 100 वर्ष होगा। सम्भाला में पहुँचना बहुत मुश्किल है क्योंकि इसे सुरक्षित रखने के लिये एक भौतिक सुरक्षा कवच बनाया हुआ है। यह चारों तरफ पहाड़ियों से घिरा है जिसके बीच में कल्प है। "Shambhala can be reached only by a long and difficult journey across a wilderness of desert and mountains and warn that only those who are called and have the necessary spiritual preparation will be able to find it others will find only blinding storms, empty mountains and even death. सम्भाला में जैन मंदिर हैं जो यह सिद्ध करता है कि बौद्धों ने तीर्थंकर परम्परा को स्वीकार किया हैं।

तिब्बत के इस लुप्त साम्राज्य की खोज पर पश्चिमी जगत का ध्यान आज से 400 वर्ष पूर्व गया। अकबर के दरबार में एक

पादरी आया था जिसने तिब्बत के उस क्षेत्र की रहस्यमय कहानियों को सुनकर उसके आधार पर एक नक्शा बनाया, **जो बाद में खो गया था लेकिन लगभग सौ वर्ष पूर्व पुनः प्राप्त हुआ। उसके बाद उस पादरी ने उस क्षेत्र में जाने का प्रयास किया।**

The Priest (Andrade) set out from Akbar's courts armed with the map and at first followed Yogis and wandering pilgrims on the road across the mountain.......... And his account of his adventurous journey was rediscovered in Kolkata in the 19th century. It was republised in 1926 under the discovery of Tibet.

शम्भाला

सन् 1973 ई. में सम्भाला के ऊपर Three dog night की कविता बहुत ही लोकप्रिय हुई थी—

Wash away my troubles wash away my pains
with the rain in Shambhala
Wash away my sorrow, wash away my shame

with the rain in Shambhala
Every one is lucky, everyone is kind
on the road to Shambhala.
Everyone is happy, everyone is so kind
on the road to Shambhala.
How does your light shine, in the halls of Shambhala.

---1973 hit song by three dog night

पश्चिमी विचारकों में सबसे प्रथम पुर्तगाली चर्च के पादरी Estevao Cacella ने सम्भाला के बारे में बताया तथा इसे चाइना या कैथे का नाम ही समझा। लेकिन बाद में उन्होंने अपनी इस भूल को स्वीकार किया। फ्रांसीसी, बौद्ध विचारक एलेकजेन्डर, डेविड़ नील ने भी सम्भाला का वर्णन किया है।

अगरथा का सबसे पहले वर्णन तथा उसको चर्चित बनाने वाले पश्चिमी विचारक फ्रांसीसी दार्शनिक Joseph Alexander San Yues 1842-1910 थे। James Hilton ने अपनी किताब 'The Last Horizon' (1933) में सम्भाला को सांगरिला नाम दिया। इस किताब पर बनी पिक्चर के बाद सारे पश्चिमी जगत में सम्भाला सांगरिला के नाम से चर्चित हो गया। यहाँ तक कि चीन ने अपने देश के बहुत ही सुन्दर प्रान्त यूनान के एक क्षेत्र को सांगरिला का नाम दे दिया।

James Hilton wrote about Shambhala as Sangrila in his book 'The Last Horizon' in 1933. Hollywood portrayed it in the 1960,s film and recent film like 'Kundan', 'Little Buddha' and 'Seven Years in Tibet' allude to the magical utopia.

एक बहुत ही महत्वपूर्ण वर्णन Sven Hedin का 'Trans-Himalaya' में सांगरिला के विषय में मिला है-- "The whole country was veiled in a curious mist". The ground seemed to steam, near objects were only faintly visible and the distant heights were quite hidden. The phenomenon was evidently due to the heavy rain of the day before followed by the cold of the night. In the forenoon a smart hail shower fell, and the guide, who had always to walk beside me, said that the hail was of no use, for only the rain could refresh the grass roots. Further westwards, he said, the pastures was better, and in a week the community of Takche would remove thither, for so long there would still be grazing on the Surnge-chu.

The ground rises exceedingly gently. We are close to the Surnge-la, a water-parting pass of the first order in the Trans-Himalaya, and yet the land before us is practically level. Mountains stand on both sides but we march along an open valley between them.

"Here is the Surnge-la," remarks my attendant.

"Impossible ! The ground is quite level; this is not a pass."

"Yet this is what we call the Surnge-la," he replies.

ये सांगरिला क्षेत्र कहाँ पर है इस विषय में उन्होंने लिखा है- "Starting in the west, Ngangla Rinco, 30 by 12 miles, is on the north side of the watershed. The two rivers feeding it, which merge 30 miles from the lake's west end,

are the Aong Tsangpo emanating from the northern slopes of the Surnge La not far from Kailas and the Lavar Tsangpo, originating from the Lavar Kangri range".

इस रहस्यमय जगह के विषय में एक कविता लिखी गयी जो इस प्रकार है–

There lies a world hidden
mysterious unknown, and forbidden
Where dwells entities with technologies,
beyond our comprehension
And knowledge kept hidden from us, in this dimension
Will the truth ever be revealed ?
Earthly forces of power and greed want forever sealed
Forbidden knowledge for warfare to wield
Where human kind understands
To use the knowledge acquired from these strange lands
For the benefit of human kind
Then entrance into there world we will find

---Frank Scassellatii

(4) वैदिक ऋषियों तथा योगियों के उल्लेखों में सिद्धाश्रम का वर्णन हमें मिलता है। दक्षिण भारत के योगी स्वामी राम आदि ने भी सिद्धाश्रम के विषय में लिखा है। सिद्धाश्रम में पहुँचे हुए योगी, महात्मा पुरुष आदि निवास करते है। बहुत ही पवित्र और शुद्ध साधनारत व्यक्ति ही वहाँ जा सकता है। जहाँ तिब्बत, चीन, और पश्चिमी देशों में अष्टापद क्षेत्र की पहचान सम्भाला, सांगरिला और अगरथा आदि नामों से है वहीं भारत में तिब्बत की इस घाटी में सिद्ध आत्माओं का निवास होने के कारण इसे सिद्धाश्रम और ज्ञानगंज भी कहा जाता है। इसका प्राचीन नाम इन्द्रभवन था। लगभग 700 वर्ष

पूर्व इस जगह का जीर्णोद्धार किया गया था। इसका नाम ज्ञानगंज इसलिए पड़ा क्योंकि यहाँ ज्ञान की गंगा बहती है। ज्ञानगंज का साहित्यिक अर्थ है, ज्ञान का भंडार या "Treasury of Knowledge of All Kinds" यहाँ पर पहुँचे हुए सिद्ध महात्मा योगी आध्यात्मिक साधना करते है। ये आध्यात्मिक ज्योत की भूमि है जो सिर्फ पृथ्वी का स्वर्ग ही नहीं बल्कि एक रहस्यमय साम्राज्य भी है। इसके उल्लेख रामायण और महाभारत में भी मिलते है। गुरुनानक ने इसको सच्चखण्ड कहा है। परमहंस योगानन्द ने अपनी किताब 'एक योगी की आत्मकथा' में लिखा है कि उनके परात्पर गुरु महावतार बाबाजी उस स्थान पर रहते हैं। गोपीनाथ कविराज ने भी 'सिद्धभूमि ज्ञानगंज' किताब लिखी है जिसमें उन्होंने अपने गुरू स्वामी विशुद्धानन्दजी के विषय में लिखा है जो एक बंगाली थे तथा बनारस में रहने लगे। वे कई बार सिद्धाश्रम गये थे और सूर्यविज्ञान का ज्ञान उन्होंने वहाँ से प्राप्त किया था। इस ज्ञान के उपयोग से वे किसी भी वस्तु को सूर्यकिरणों के द्वारा दूसरी वस्तु में परिवर्तित कर सकते थे। योगानन्द ने अपनी आत्मकथा में स्वामी विशुद्धानन्द से कलकत्ता में अपनी मुलाकात का वर्णन किया है तथा उनके इस यौगिक ज्ञान का अद्भुत प्रयोग भी देखा। जिसमें उन्होंने सूर्य की किरणों को परिवर्तित कर सुगन्धित इत्र बनाया। पॉल ब्रंटन ने अपनी किताब 'A Search In Secret India' में इस विषय पर लिखा है कि कैसे स्वामी विशुद्धानन्दजी ने सिर्फ इत्र ही नहीं बनाया बल्कि एक मृत पक्षी को भी जीवित किया। डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जो जोधपुर निवासी थे तथा ज्योतिषी के पण्डित तथा तांत्रिक भी थे। उन्होंने मंत्र, तंत्र, यंत्र विज्ञान मासिक पत्रिका प्रकाशित की। जिसमें उन्होंने सिद्धाश्रम का वर्णन किया। उन्होंने अपनी साधना सिद्धाश्रम में की थी जहाँ उनका नाम निखिलेश्वरानंद था। वहीं से उन्होंने तंत्र, मंत्र की शक्तियाँ प्राप्त

की थी। उन्होंने जल तरणी, चारण विद्या आदि बारह प्रकार की शक्तियों का ज्ञान वहाँ से प्राप्त किया था।

भारतीय योगियों के वर्णन में सिद्धाश्रम एक रहस्यमयी वास्तविक गुप्त स्थान पृथ्वी पर है ऐसा कहा गया है। जो अमर हो गये, जो मानवता के प्रति संवेदनात्मक दृष्टि रखते हैं, जो सारे जहाँ के मालिक हैं, जाति धर्म और राष्ट्र की सीमाओं से परे है उनके स्थान को सिद्धाश्रम सांगरिला या सम्भाला के नाम से जाना जाता है। ये आश्रम स्वर्ग की तरह है। सच्चाई, अच्छाई और सुन्दरता का प्रतीक है। अद्‌भुत जगह है तथा मानव समाज के लिए बहुत ही पवित्र और पावन भूमि मानी गई है। यह कैलाश मानसरोवर के उत्तर पूर्व में बहुत बड़े भूमिखण्ड पर स्थित है

तथाकथित सिद्धाश्रम

जिसका कोई भौगोलिक नक्शा नहीं है। तथा इसकी खोज वर्तमान वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा नहीं की जा सकती है। इस क्षेत्र को हम अपनी आँखों से देख सकते हैं लेकिन आध्यात्मिक आँखों द्वारा। जो

लोग साधना में अनुशासित हैं वहीं इस क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं और वहाँ रह भी सकते हैं।

दादामुनिश्वर वशिष्ठजी महाराज के अनुसार वे स्वयं उस घाटी में गये थे और वहाँ के संचालकों से मिले और उनसे दैविक जड़ी-बूटियाँ प्राप्त की। इस पृथ्वी पर यह एक ऐसी जगह हैं जहाँ समय रुक जाता है, आयु रुक जाती है और यौवन बना रहता है। यहाँ पर व्यक्ति के पहुँचने पर उसकी काया लम्बे समय तक उसी तरह वैसे ही रहती है। और उस जगह से बाहर आने पर तुरन्त असर होता है। यहाँ पर सुन्दर झरने, दैविक झील जिसे सिद्ध योगी लेक कहते हैं। सैकड़ों किस्म के सुन्दर फूल चारों तरफ खिले हुए हैं और स्वादिष्ट फलों के वृक्ष भी भरपूर हैं। कल्पवृक्ष यहाँ पर विद्यमान है। कल्पवृक्ष के फल दैविकगुणों से भरपूर है। बिना अनुमति के कल्पवृक्ष के फलों को बाहर नहीं ले जाया जा सकता है। यहाँ पर हिन्दू योगी, जैन और बौद्ध मुनि साधु और साध्वी रहते हैं। In the Jain monasteries, the great knowledge of Jain Mantra, Yantra and Tantra exploring the cosmic seven heavens is taught. The main deity worshipped here is Mahashakti the great mother "Padmawati". यह क्षेत्र पृथ्वी के ब्लैक होल की तरह है तथा वहाँ से अन्तरिक्ष के अन्य ग्रहों में जाया जा सकता है। यहाँ पर किसी प्रकार की शक्तिकवच है जो इस घाटी को बाहरी संसार से छिपाकर रखता है। यहाँ पर तीन केन्द्र है। यहाँ विकसित वैज्ञानिक तकनीक का ज्ञान दिया जाता है। यहाँ पर सोलह तरह के वैज्ञानिक तकनीक का ज्ञान सिखाया जाता है जिसमें प्रमुख सूर्यविज्ञान तकनीक है। यहाँ पर योगियों की उम्र 200-400 तथा हजार वर्ष या इससे भी अधिक

है। कुछ योगी यहाँ आध्यात्मिक शरीर के रूप में भी रहते हैं। धरती पर होते हुए भी यह इस जगत के प्रभाव से अलग है। यहाँ योगी परमहंस, भैरवी, यक्ष-यक्षिणी आदि रहते हैं। स्वामी विशुद्धानंदजी ने वहाँ का वर्णन करते हुए बताया है कि महर्षि महातपा बाबा की उम्र 1500 साल की है। वे दैविक शरीर में है जो समय और काल की सीमा से परे हैं। वे किसी भी ग्रह में इच्छानुसार अबाधित रूप से जा सकते हैं। ये विशाल आश्रम चारों तरफ बर्फीली पहाड़ियों से ढका है। जिसमें चारों ओर पानी भरा हुआ है। जिसे पार करने के लिए एक धनुष के आकार का पुल है। जिसे आवश्यकतानुसार उपयोग में लाया जाता है अन्यथा अदृश्य रहता है।

स्वामी विकासगिरि के अनुसार यहाँ पर कमल के फूल खिले हुए हैं। मानसरोवर लेक में पानी यहाँ की धारा से ही जाता है। ये

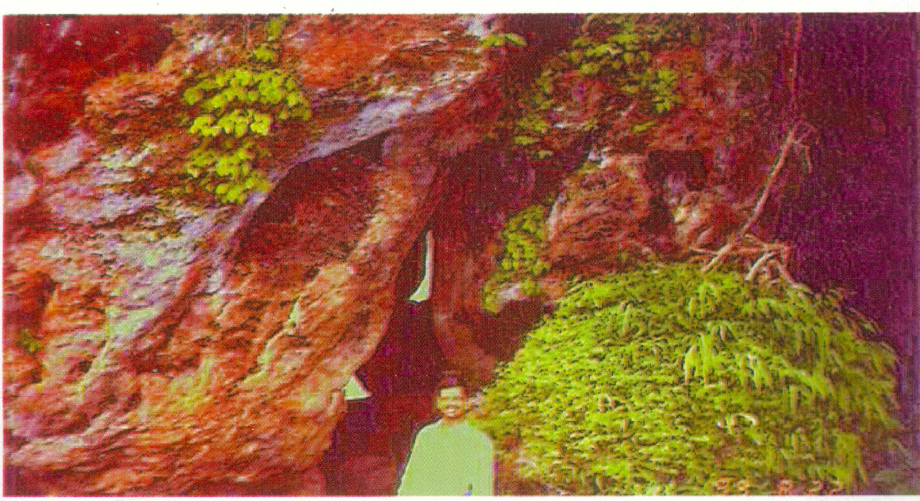

साधको का आवास गृह

ऐसी जगह है जहाँ सर्दी-गर्मी नहीं है और न ही भूख-प्यास। स्वर्ग की परियां भी यहाँ आकर भगवान के समक्ष नृत्य करती हैं। लगभग ऐसा ही वर्णन श्री अमित दोशी ने बताया है।

(5) यह वह क्षेत्र है जहाँ से सिन्धु नदी का उद्‌गम ही नहीं वरन् पवित्र मानसरोवर लेक में भी यहीं से पानी आता है। ब्रह्मपुत्र नदी और सतलज नदी यहीं से निकलती है। डॉ. पी. एस. ठक्कर के अनुसार सरस्वती का उद्‌गम स्थल भी यही क्षेत्र है। यह माना जाता है कि सिन्धु नदी सिंह मुख से निकली है, ब्रह्मपुत्र अश्वमुख से, सतलज हाथी मुख से और करनाली मयूर मुख से। इन सारी नदियों का स्रोत अष्टापद क्षेत्र में है। डॉ. पी. एस ठक्कर ने अपने

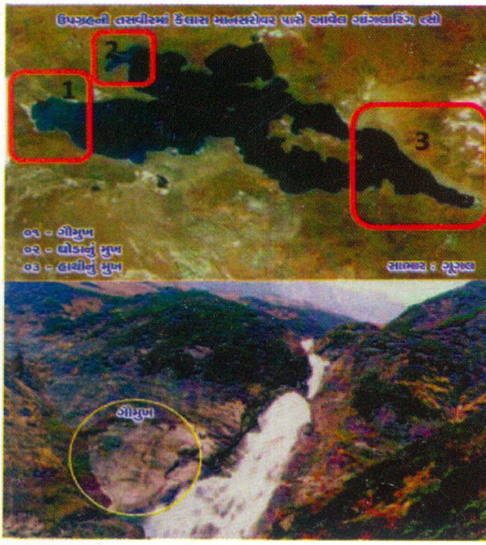

नगंगला रिंचो
तथाकथित अष्टापद क्षेत्र
गोमुख, अश्वमुख, हाथी मुख

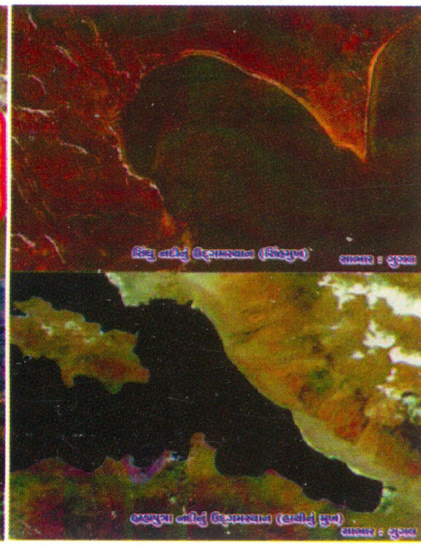

नगंगला रिंचो
तथाकथित अष्टापद क्षेत्र
सिंह मुख, हाथी मुख

स्रोत ग्रन्थ वैदिक सरस्वती में इस पर प्रकाश डालते हुए वहाँ के चित्र भेजे हैं जिनसे प्राचीन शास्त्रों में वर्णित इस कथन की पुष्टि होती है। सिन्धु नदी जो प्राचीनतम सभ्यता की जननी मानी जाती है अतः विश्व की प्राचीनतम सभ्यता का उद्‌गम स्रोत भी यही स्थान है। विद्वानों ने भी इसे Hub of the Human Civilization कहा है। आदि तीर्थंकर ऋषभदेव ने जो ज्ञानरूपी प्रकाश दिया

तथा सभ्य समाज का निर्माण कर मानव को सभी कलाओं में दक्ष किया अतः निःसन्देह यह क्षेत्र मानव सभ्यता का आदि स्रोत है।

(6) श्री अमित भाई ने अष्टापद पर्वत पर आदिनाथ भगवान की एक हजार आठ मूर्तियाँ देखी जो 65 मीटर ऊँची है। जिनमें

तथाकथित अष्टापद पहाड़ के ऊपर बने मंदिर के ध्वंसावशेष

तथाकथित अष्टापद पहाड़ के ऊपर बने मंदिर के ध्वंसावशेष

एक का चित्र पूर्व पृष्ठों में दिया है। श्री अमित भाई का यह उल्लेख इस बात को प्रमाणित करता है कि इस युग में सबसे प्रथम मंदिर और मूर्तियों का निर्माण आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने किया था। पाषाण और शिल्प कला का प्रारम्भ तभी से हुआ। यह एक बहुत ही पुष्ट प्रमाण है जो आदि संस्कृति की धारा को जीवन्त कर रहा है तथा जैन वांङ्मय की प्रामाणिकता को भी पुष्ट करता है। जैन वांङ्मय में स्पष्ट लिखा है कि अष्टापद पर जो ऋषभदेव के निर्वाण भूमि है उस पर मंदिरों और मूर्तियों का निर्माण किया गया तथा आज से 2600 साल पहले चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के परम शिष्य, प्रथम गणधर गौतम बुद्ध ने अष्टापद पर जाकर तीर्थंकरों की वन्दना की थी।

तथाकथित अष्टापद गुफा में जाने का रास्ता जहाँ रत्नों की प्रतिमाएं हैं।

(7) तीर्थंकर भगवान के अतिशयों में वर्णन आता है कि उनके चारों दिशाओं में पच्चीस-पच्चीस योजन तक सब प्राणियों के रोग शान्त हो जाते हैं और नये रोग नहीं होते। सब प्राणियों का

बैर-भाव नष्ट हो जाता है, महामारी नहीं होती, अकाल नहीं पड़ता। ऋतुएँ अनुकूल रहती हैं। बुढ़ापा नहीं आता। ये सारी अवस्थाएँ अष्टापद क्षेत्र के विषय में श्री अमित भाई तथा योगियों के वर्णनों से भी स्पष्ट होती है।

(8) जैन साहित्य में वर्णन आता है कि अयोध्या से भरत चक्रवर्ती आदिनाथ प्रभु के दर्शन हेतु अष्टापद पर जाते रहते थे। अयोध्या से अष्टापद स्पष्ट दिखाई देता था। अतः अयोध्या अष्टापद के निकट होना आवश्यक है। श्री अमित भाई के अनुसार अयोध्या नगरी के प्राचीन ध्वंसावशेष आज भी इस क्षेत्र में है। एवं श्री राम के चरण भी वहाँ पर स्थित है।

(9) एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात जो अष्टापद के सन्दर्भ में आती है वह अमित भाई के अनुसार सिद्धाश्रम से अष्टापद जाने के मार्ग में नौ पड़ाव पार करने होते हैं। जिनको पार करने का ज्ञान सिद्धाश्रम से प्राप्त करना होता है। इन नौ पड़ावों के पहले पड़ाव

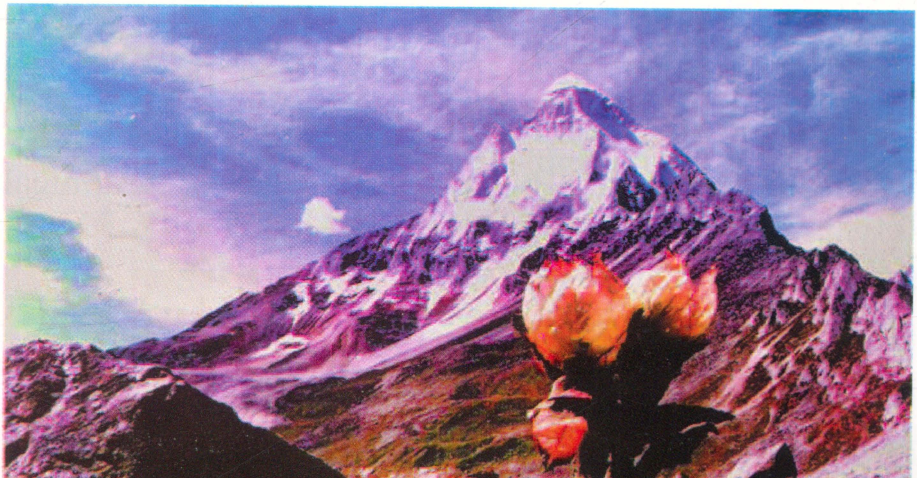

अष्टापद जाने के प्रथम पड़ाव पर ब्रह्मकमल

में ब्रह्मकमल पड़ता है। जिसकी तीव्र सुगन्ध से मन अचेतन अवस्था में चला जाता है।

अष्टापद जाने के द्वितीय पड़ाव पर स्थित सरोवर

बौद्ध धर्म से पहले तिब्बत में बौन्पो धर्म प्रचलित था। जिसमें नौ मंजिला स्वस्तिक आकार के पर्वत का वर्णन मिलता है। जिसे बौन्पो लोग बहुत ही पवित्र मानते हैं।

बोन्पो परम्परा के अनुसार— The mysterious land of Olmo Lund-ring (‘ol-mo lung-rings) or Olmoling (‘ol-mo’i gling) is said to be part of a larger geographical region to the northwest of Tibet.

In all of the early Bonpo texts Olmo Lung-ring is clearly located to the west and the north of Tibet.

At the very center of this innermost land rises the holy nine-storyed swastika mountain of Yungdrung Gutseg (g. yung-drung dgu-brtsegs), a crystal monolith

in the shape of a pyramid. These nine storeys or levels of the sacred mountain signify the Nine Ways of Bon (theg-pa rim dgu) into which the teachings leading to liberation and enlightenment are classified. In the Bonpo cosmological system, the number nine is especially important and significant.

बौन्पो परम्परा के ये नौ मंजिल अष्टापद जाने के नौ पड़ाव है। तथा भरत चक्रवर्ती द्वारा बनाया गया मंदिर स्वस्तिक आकार का होने के कारण यही नौ मंजिला स्वस्तिक पहाड़ माना जाना चाहिए। जैन परम्परा में नवपद पूजा तथा अष्टापद तप का विवरण भी इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है।

(10) अमित भाई ने वहाँ पर एक ग्रन्थ भण्डार अर्थात् पुस्तकालय होने का उल्लेख किया है। जो जैन मुनियों की देख रेख में है। हमारे आचार्यों के पास विशिष्ट सिद्धियाँ थी लेकिन आगम शास्त्र का बारहवां अंग लुप्त हो गया माना जाता है। उसमें जो सिद्धियाँ थी उनका कोई प्रामाणिक ज्ञान किसी के पास नहीं है। कहते हैं कि इसकी वाचना भद्रबाहु स्वामी ने मुनि स्थूलिभद्र स्वामी को नहीं दी थी। इसमें (1) परकाया प्रवेश सिद्धि, (2) आकाश गमन सिद्धि, (3) जल गमन प्रक्रिया सिद्धि, (4) हादी विद्या— जिसके माध्यम से साधक बिना कुछ आहार ग्रहण किये वर्षों जीवित रह सकता है, (5) कादी विद्या— जिसके माध्यम से साधक या योगी कैसी भी परिस्थिति में अपना अस्तित्व बनाए रख सकता है, उस पर सर्दी, गर्मी बरसात, आग, हिमपात आदि का कोई प्रभाव व्याप्त नहीं होता। (6) काल सिद्धि- जिसके माध्यम से हजारों वर्ष पूर्व के क्षण को या घटना को पहचाना जा सकता है,

देखा जा सकता है और समझा जा सकता है, साथ ही आने वाले हजार वर्षों के कालखंड को जाना जा सकता है कि भविष्य में कहां क्या घटना घटित होगी और किस प्रकार से घटित होगी। इसके बारे में प्रमाणिक ज्ञान एक ही क्षण में हो जाता है। यहीं नहीं अपितु इस साधना के माध्यम से भविष्य में होने वाली घटना को ठीक उसी प्रकार से देखा जा सकता है, जिस प्रकार व्यक्ति टेलीविजन

जैन पुस्तकालय (सिद्ध आश्रम)

पर कोई फिल्म देख रहा हो। (7) संजीवनी विद्या—जो शुक्राचार्य या कुछ ऋषियों को ही ज्ञात थी, जिसके माध्यम से मृत व्यक्ति को भी जीवन दान दिया जा सकता है। (8) इच्छा मृत्यु साधना– जिसके माध्यम से काल पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है और साधक चाहे तो सैकड़ों-हजारों वर्षों तक जीवित रह सकता है। (9) काया-कल्प साधना– जिसके माध्यम से व्यक्ति के शरीर में पूर्ण परिवर्तन लाया जा सकता है और ऐसा परिवर्तन होने पर वृद्ध व्यक्ति का भी काया-कल्प होकर वह स्वस्थ, सुन्दर युवक बन सकता है, रोगरहित ऐसा व्यक्तित्व कई वर्षों तक स्वस्थ रहकर अपने कार्यों में सफलता पा सकता है। (10) लोक गमन सिद्धि–

इसके माध्यम से पृथ्वी-लोक में ही नहीं, अपितु अन्य लोकों में भी उसी प्रकार से विचरण कर सकता है, जिस प्रकार से हम कार के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान या एक नगर से दूसरे नगर जाते हैं। इस साधना के माध्यम से भूलोक, भुवःलोक, स्वःलोक, महःलोक, जनःलोक, तपःलोक, सत्यलोक, चन्द्रलोक, सूर्यलोक, पाताल और वायुलोक में भी जाकर वहाँ के निवासियों से मिल सकता है, वहाँ की श्रेष्ठ विद्याओं को प्राप्त कर सकता है और जब भी चाहे एक लोक से दूसरे लोक तक जा सकता है। (11) शून्य साधना– जिसके माध्यम से प्रकृति से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है, खाद्य पदार्थ, भौतिक वस्तुएं और बहुमूल्य हीरे-जवाहरात आदि शून्य से प्राप्त कर मनोवांछित सफलता और सम्पन्नता अर्जित की जा सकती है। (12) सूर्य विज्ञान– जिसके माध्यम से एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में रूपान्तरित किया जा सकता है।

कालान्तर में चित्तौड़ के एक स्तम्भ में जो ग्रन्थ रखे हुए थे। वहाँ से निकालने की चेष्टा करने पर ये अदृश्य हो गए थे। ये ग्रन्थ सिद्धाश्रम के पुस्तकालय में सुरक्षित रखे हुए हैं तथा पहुँचे हुए योगी अपनी उत्कृष्ट साधना से इन ग्रन्थों की विद्याओं को अधिकृत करते है। श्री विशुद्धानन्दजी, श्री नारायण दत्त श्रीमाली ने वहाँ पर साधना करके इन विद्याओं की शिक्षा प्राप्त की। सिद्धाश्रम के पुस्तकालय का चित्र यहाँ संलग्न है।

(11) पहाड़ के ऊपर सिंहनिषद्या प्रसाद में जो रत्नों की प्रतिमाएं थी। वह मंदिरों के नष्ट हो जाने के कारण गुफाओं में रखी गयी है। जिन्हें बड़े छिद्रों द्वारा देखा जा सकता है। पहाड़ के ऊपर देखने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे एक सिंह बैठा हो। कहते है कि भूकम्प तथा बिजली गिरने से ये मंदिर नष्ट हो गये थे।

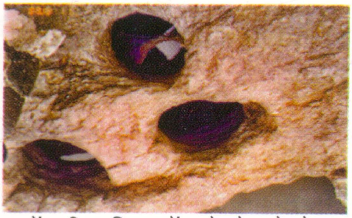

रत्नों की प्रतिमाओं को देखने के लिए बने छिद्र

सिंह निषद्या पर्वत

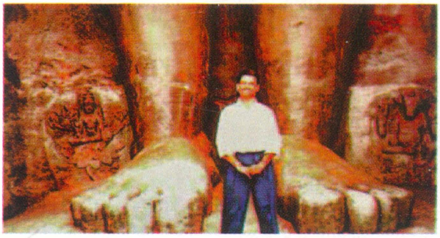

श्री अमित दोशी (अष्टापद पर्वत)

(12) विष्णु, ब्रह्मा, शिव, काली, गौरी, भैरवी, लक्ष्मी, सरस्वती आदि सभी शक्ति का रूप है और भिन्न-भिन्न शक्तियों का प्रतीक है जिनकी आराधना भौतिक उपलब्धियों के लिए की जाती है। ये शक्तियाँ उस क्षेत्र की रक्षा करती हैं क्योंकि यह तीर्थंकरों का पवित्र स्थान है। भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए इन शक्तियों का आह्वान किया जाता है। वैदिक धर्म और जैन धर्म में जो मूल अन्तर है वह इसी बात से बहुत ही स्पष्ट रूप से दर्शाता

अष्टापद जाने का मार्ग

है कि जो लोग इन शक्तियों का आह्वान करते है अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए वहीं आज के ब्राह्मण या हिन्दू हो गए! और जो लोग इन शक्तियों के आराध्य देव तीर्थंकरों की आराधना करते हैं, और त्याग तथा पुरुषार्थ द्वारा अपने कर्मों का क्षय करके आगे बढ़ते है वहीं वास्तव में जिन है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मानव संस्कृति की जो मूल परम्परा थी वह तीर्थंकर परम्परा थी।

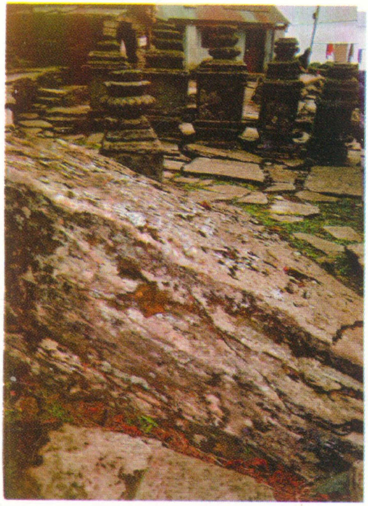

अष्टापद पर्वत की तलहटी

तीर्थंकर मूर्ति (शम्भाला)

(13) अष्टापद क्षेत्र इतना पवित्र और रहस्यमय है कि वहाँ जब हवा चलती है तो हवा की तरंगों के साथ-साथ पत्थरों से श्लोक भी गुंजरित होते है ऐसा अमित भाई जी का कहना है। उन्होंने पत्थरों से गुंजरित भक्तामर स्त्रोत वहाँ सुना था। ये वास्तव में क्या है इस सन्दर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी मिली है— 1937 में तिब्बत और चीन के बीच बोकान पर्वत की एक गुफा में सात सौ सोलह पत्थर के रिकार्ड मिले हैं। और वे रिकार्ड हैं महावीर से दस हजार साल पुराने यानी आज से कोई साढ़े बारह हजार साल पुराने। बड़े आश्चर्य के हैं, क्योंकि वे रिकार्ड ठीक वैसे

सिद्धाश्रम से अष्टापद यात्रा का मूल पड़ाव (बेस कैम्प)

ही हैं जैसे ग्रामोफोन का रिकार्ड होता है। उनके बीच में एक छेद है, और पत्थर पर ग्रुब्ज हैं—जैसे कि ग्रामोफोन के रिकार्ड पर होते हैं। अब तक राज नहीं खोला जा सका है कि वे किस यंत्र पर बजाए जा सकेंगे। रूस के एक बड़े वैज्ञानिक डॉ. सर्जिएव ने वर्षों तक मेहनत करके यह प्रमाणित किया है कि वे हैं तो रिकार्ड ही। किस यंत्र पर और किस सुई के माध्यम से वे पुनरुज्जीवित हो सकेंगे, यह अभी तय नहीं हो सका। मगर एकाध पत्थर का टुकड़ा होता तो संयोगिक भी हो सकता था। सात सौ सोलह हैं। सब एक जैसे, जिनमें बीच में छेद हैं। सब पर ग्रुब्ज हैं और उनकी परीक्षा की, गई तब बड़ी हैरानी हुई, उनसे प्रतिपल विद्युत की किरणें विकीर्णित हो रही हैं।

—ओशो—धर्म का परम विज्ञान

(14) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात अमित दोसीजी ने बताई वह यह थी कि कैलाश जाने के छठे

पड़ाव पर एक शिला लेख उन्होंने देखा जिससे यह पता चलता था कि गणधर गौतम और गौतम बुद्ध एक ही व्यक्तित्व थे। तित्थयर के 2009 के विशेषांक में मैंने इस विषय पर एक शोधपरक लेख प्रकाशित किया था। यह जानकारी मेरी इस मान्यता को पूर्णरूप से प्रमाणित करती है। सम्भाला या सांगरिला में जैन मंदिर होना भी इसी बात की पुष्टि करता है।

अष्टापद के छठे पड़ाव का शिलालेख

Gautam Buddha and Swami Gandhar is a same guys. This information found from the shilalekh. This shilalekh is how many years old, I don't know but that written language is one of Tibetan. As per Swami Vivek thought. In Tibet that language called Lumbani. This language is mentioned in the Book "History of Writing – Andrew Robinson, Publication by Thames & Hudson. This is in Pictography and when Gautam Swami was going to establish new Panth than he had prepared this write-up in Tibet.

As per that write-up he had to add that he had search new branch of Jain religion and after the completion that is known as Buddha religion.

अष्टापद के निकट प्राकृतिक श्रीयन्त्र पहाड़

(15) कैलाश के सप्तऋषि गुफा से मौसम साफ रहने पर अष्टापद गिरि के दर्शन होते है ऐसा अमित भाई का कहना है।

(16) हिन्दू योगियों के वर्णनों में स्पष्ट लिखा है कि यहाँ चौबीस तीर्थंकरों तथा अनेक जैन सिद्धों की मूर्तियाँ है। यहाँ की प्रमुख देवी जिसकी पूजा की जाती है वे देवी पद्मावती है। वहाँ कोई दरवाजा या घर नहीं जहाँ पद्मावती देवी का शासन न चलता हो। कहने का तात्पर्य यह है कि चाहे वह हिन्दू योगी हो, या बौद्ध लामा हो या जैन साधु हो सभी पद्मावती की उपासना करते है। श्री अमित दोशी के अनुसार ये पूरा क्षेत्र रात में भी दिन के उजाले की तरह चमकता है क्योंकि यहाँ पर ऐसे पौधे लगाए गए है जो प्रकाश देते है।

(17) कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य ने अष्टापद के संदर्भ में वहाँ यन्त्रमय मानव का उल्लेख किया है। श्री अमित दोशीजी ने भी

बताया कि वहाँ पाषाण के रोबोट की तरह मानव हैं जो तीर्थ की रक्षा के साथ-साथ और भी कार्य करते हैं। इससे एक बात और प्रमाणित होती है कि ऋषभदेव का समय पाषाण युग भी माना जा सकता है।

हिमालय के योगियों की गुप्त सिद्धियाँ नामक किताब में डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली ने इस क्षेत्र का वर्णन करते हुए लिखा है-

सिद्धाश्रम विश्व का एक अद्वितीय सिद्धस्थल है, जो कि कैलाश मानसरोवर से उत्तर की ओर स्थित है। वायुयान या अन्य माध्यमों से उसे देखना सम्भव नहीं है, क्योंकि यह पूर्णतः सिद्ध पीठ स्थल है। जहाँ कई सौ वर्ष आयु प्राप्त योगी साधनारत हैं।

कई सौ मील भू-भाग में फैला हुआ यह स्थान अद्वितीय तपस्या भूमि है, जिसे प्राप्त करने के लिए और जिसमें भाग लेने के लिए उच्च कोटि के सन्त, योगी और साधु तरसते रहते हैं। वैदिक काल से लेकर आज तक उसका बराबर अस्तित्व बना रहा है। कुछ योगी तो यहाँ कई हजार वर्ष की आयु प्राप्त हैं।

इसके अतिरिक्त कई अज्ञातनामा योगी यहाँ साधनारत हैं।

शम्भाला प्रशिक्षण केन्द्र

कुछ योगी तो कई सौ वर्षों से ध्यानस्थ हैं, जिनके ऊपर मिट्टी की परत जम गई है। दूर से देखने पर ऐसा लगता है कि कोई मिट्टा का ढूहा हो। परन्तु उनमें से दो चमकती हुई आँखों को देखकर ही विश्वास करना पड़ता है कि ये मात्र ढूहें नहीं, अपितु जीवन्त योगी हैं, जो साधनारत हैं। जिनकी आँखों की पुतलियां बराबर घूमती रहती हैं, उसी से उनके जीवन्त होने का आभास होता है।

केवल योगी, साधु और संन्यासी ही नहीं, अपितु संन्यासिनियाँ और योगिनियाँ भी इस सिद्धाश्रम में विचरण करती हुई दिखाई देती हैं। यहाँ पर किसी प्रकार का कोई द्वेष, छल, कपट, व्यभिचार, असत्य और अविवेक नहीं, अपितु सभी अपने आप में मग्न हैं। सभी साधना के क्षेत्र में उन्नति की ओर चिन्तनशील हैं, सभी के मन में प्रकृति के अज्ञात रहस्यों को समझने की भावना है, सभी अपने जीवन को उन्मुक्त करने की ओर अग्रसर हैं।

सारा प्रदेश सुगन्धित पुष्पों से आच्छादित है। सारी धरती मखमली हरी दूब और द्रुमों से भरी है। असंख्य प्रकार के पुष्प खिले रहते हैं, ये हमेशा तरोताजा, स्वस्थ और सुगन्धित बने रहते हैं। सिद्धाश्रम में कई कल्पवृक्ष हैं, जिनका पुराणों में प्रामाणिकता के साथ वर्णन है। इन कल्पवृक्षों के नीचे बैठकर साधक जो भी इच्छा प्रकट करते है, वह उसी समय पूर्ण हो जाती है।

यहाँ की सारी धरती एक विशेष सुगन्ध से भरी है। शीतल-मन्द बयार पूरे शरीर को रोमांचित कर देती है। जगह-जगह उच्च कोटि के साधु-सन्त तपस्या में निरत हैं। मीलों लम्बी सुन्दर पर्ण कुटियों को देखकर उनमें बैठने को जी चाहता है। कहीं पर स्फटिक पत्थरों से निर्मित सुन्दर भवन हैं, जो कि वशिष्ठ और विश्वामित्र के आश्रमों का स्मरण करा देते हैं। वास्तव में यह सारा भू-भाग अपने आप में अलौकिक और अद्वितीय हैं।

"इतना होने पर भी यह ज्यादा प्रकाश में नहीं आ सका, इसका कारण यह है कि यह आश्रम बहुत ही उच्च कोटि के साधकों का आश्रय स्थल रहा है। यहाँ इस आश्रय में कोई भी योगी, साधु या संन्यासी प्रवेश पा सकता है। यहाँ गृहस्थ पुरुष या स्त्री प्रवेश पा सकता हैं। किसी को भी किसी प्रकार का बन्धन नहीं है, केवल इसमें प्रवेश के लिए जो नियम हैं, उनका पालन होना अनिवार्य है।"

स्वामी कृष्णानंद ने अपनी किताब "Door Ways to Light" में लिखा है– There is nothing like a destiny that will definitely take place. Any future event can be altered by spiritual powers and meditation. An accident can be averted. Even a war states Krishna Nanda talks about the existence of rishis, described as light beings in higher plains. They are not just mythical characters from puranas" states Krishna Nanda "Some are here on earth and many are in higher plains. They are part of a huge network of light beings who work under cosmic intelligence-- I am touch with several of these light beings including Amara, and I contact them astrally.

पश्चिमी विचारकों ने बौद्ध साहित्य को बहुत ज्यादा महत्व दिया है। जबकि सम्भाला, सांगरिला, अगरथा, सिद्धाश्रम, ज्ञानगंज, सच्चखण्ड आदि नाम बाद में आये। सबसे प्राचीन उल्लेख इस क्षेत्र का जो मिलता है वह अष्टापद के नाम से जैन साहित्य में वर्णित है। द्वितीय आगम सूत्रकृतांग सूत्र में अष्टापद पर आदि तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा अपने 98 पुत्रों को प्रतिबोध देने का वर्णन मिलता है। आवश्यक सूत्र, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, कल्पसूत्र, नंदीसूत्र, आदिपुराण, त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित्र, आदि अनेक ग्रन्थों में अष्टापद

का ऋषभदेव की निर्वाण भूमि के संदर्भ में उल्लेख आता है तथा इसे कैलाशगिरि भी कहा गया। यह उल्लेख अन्य धार्मिक साहित्यों में मिले वर्णनों से प्राचीन है। इसके अलावा आज से 2600 वर्ष पूर्व भगवान महावीर के जीवन चरित्र में अष्टापद का उल्लेख मिलता है गौतम स्वामी के सन्दर्भ में। जिसमें भगवान महावीर ने अष्टापद तीर्थ की महिमा का वर्णन करते हुए कहा था कि जो साधक स्वयं की आत्मलब्धी के बल पर अष्टापद पर्वत पर जाकर जिन मूर्तियों की वन्दना करेगा और एक रात्रि वहाँ निवास करेगा तो वह निश्चित रूप से मोक्ष का अधिकारी बनता है। गौतम स्वामी अपने आत्मिक बल द्वारा सूर्य की किरणों का अनुकरण करके अष्टापद पर्वत पर पहुँचे और चतुर्मुखी प्रासाद में चार, आठ, दस, दो की संख्या में विराजमान चौबीस तीर्थंकरों का वन्दन किया। उस समय वहाँ पर 1500 तापस पहली, दूसरी और तीसरी मेखला से आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। गौतम स्वामी ने लौटते समय उनको प्रतिबोधित किया। गौतमरास में वर्णन है कि–

जउ अष्टापद सेल, वंदइ चढी चउवीस जिण,
आतम-लब्धिवसेण, चरम सरीरी सो य मुणि।
इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय,
तापस पनर-सएण, तउ मुणि दीठउ आवतु ए।।25।।

गणधर गौतम की जिज्ञासा थी कि– "मैं चरम शरीरी हूँ या नहीं" अर्थात् इसी मानव शरीर से, इसी भव में मैं निर्वाण पद प्राप्त करूंगा या नहीं?

महावीर ने उत्तर दिया– आत्मलब्धि–स्ववीर्यबल से अष्टापद पर्वत पर जाकर भरत चक्रवर्ती निर्मित चैत्य में विराजमान चौबीस तीर्थंकरों की वन्दना जो मुनि करता है, वह चरम शरीरी है।

प्रभु की उक्त देशना सुनकर गौतम स्वामी अष्टापद तीर्थ की यात्रा करने के लिए चल पड़े।

उस समय अष्टापद पर्वत पर आरोहण करने हेतु पहली, दूसरी और तीसरी सीढ़ियों पर क्रमशः पाँच सौ-पाँच सौ कुल पन्द्रह सौ तपस्वीगण अपनी-अपनी तपस्या के बल पर चढ़े हुए थे। उन्होंने गौतम स्वामी को आते देखा। ।।25।।

तप सोसिय निय अंग, अम्हां संगति न उपजइ ए,
किम चढसइ दिढकाय, गज जिम दासइ गाजतउ ए।
गिरुअउ इणे अभिमान, तापस जो मन चितवइ ए,
तउ मुनि चढियउ वेग, आलंबवि दिनकर किरण ए ।।26।।

गौतम स्वामी को अष्टापद पर्वत पर चढ़ने के लिए प्रयत्नशील देखकर वे तापस मन में विचार करने लगे–यह अत्यन्त बलवान मानव जो मदमस्त हस्ति के समान झूमता हुआ आ रहा है, यह पर्वत पर कैसे चढ़ सकेगा? असम्भव है। लगता है कि उसका अपने बल पर सीमा से अधिक अभिमान है। अरे! हमने तो उग्रतर तपस्या करते हुए स्वयं के शरीरों को शोषित कर, अस्थि-पंजर मात्र बना रखा है, तथापि हम लोग तपस्या के बल पर क्रमशः एक, दो, तीन सीढ़ियों तक ही चढ़ पाये, आगे नहीं बढ़ पाये, तापसगण सोचते ही रहे और उनके देखते ही देखते गौतम स्वामी सूर्य की किरणों के समान आत्मिक बलवीर्य का आलम्बन लेकर तत्क्षण ही आठों सीढ़ियां पार कर तीर्थ पर पहुँच गये।।26।।

ये वर्णन बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि बोन्पो साहित्य में भी हमें 9 मंजिला स्वस्तिक पहाड़ के रूप में अष्टापद का वर्णन मिलता है। इस मंजिल को हम सीढ़ी के रूप में नहीं मानकर पड़ाव के रूप में देखें तो ज्यादा युक्तियुक्त होगा। इसी प्रकार सिद्ध

आत्माएं वे होती है जो केवलज्ञान प्राप्तकर मुक्ति प्राप्त कर लेती है। और उनकी प्रतिमाएं संस्कृति के आदिकाल से जिस क्षेत्र में विराजमान की गई वहीं क्षेत्र सिद्ध क्षेत्र या सिद्ध आत्माओं के निवास का क्षेत्र कहलाया। सिद्ध का एक दूसरे अर्थ में भी प्रयोग किया गया। वह है शक्तियों को सिद्ध कर लेना। यानि मन्त्रों को सिद्ध करना, और मंत्रों के प्रभाव से शक्तियों को हासिल करना तथा जिसके द्वारा देवी-देवताओं को या यक्ष-यक्षिणियों को अपने वश में कर लेना। आध्यात्मिक स्तर पर जो सिद्ध हो चुके है वे इन सब मंत्र सिद्धियों, चमत्कारों के प्रभाव से मुक्त हो चुके हैं। उस स्तर पर पहुँचना साधारण बात नहीं है। यह क्षेत्र बड़े-बड़े योगियों, साधुओं, यक्षों द्वारा संचालित होता है और सभी अपने-अपने तरीके से उन मुक्त, सिद्ध आत्माओं के स्तर तक पहुँचने का मार्ग खोजते है। अन्तिम लक्ष्य हमें तीर्थंकरों तक पहुँचाता है। जहाँ प्रत्येक को 9 पड़ाव पार करने पड़ते हैं। तभी उन्हें दर्शन होते है। ज्ञानगंज सम्भाला या जो भी कहे वहीं से आगे अष्टापद पहाड़ी पर जाने के पड़ाव प्रारम्भ होते हैं। जिसकी तैयारी वहीं से शुरु होती है।

अष्टापद के सन्दर्भ में हमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण विवरण भूटान निवासी लामचीदास गोलालारे का मिलता है जिन्होंने चीन, वर्मा, कामरूप तथा अष्टापद की यात्रा की थी। जिसमें उन्हें अठारह वर्ष लगे थे। वह पढ़े-लिखे नहीं थे लेकिन उनका जो विवरण मिला वह सत्य की कसौटी पर बहुत ही खरा था। इन देशों में जैन मंदिरों के विवरण एवं अष्टापद का दिशा निर्देश बहुत ही स्पष्ट तथा सही जानकारी देने वाला था। अष्टापद पर पायी जाने वाली मणियों के नाम भी उनके वर्णन में मिलते हैं जैसे चिन्तामणि, पद्मरागमणि, लालमणि, सर्पमणि आदि। इसकी पुष्टि श्री अमित भाई ने भी की है। लेकिन साक्ष्यों के अभाव में अभी तक

लामचीदास जी की इस जानकारी का हमलोग उपयोग नहीं कर पाये। लेकिन आज जो प्रमाण हमें मिल रहे हैं वे उनके वर्णनों की पुष्टि करते हैं। तथाकथित अष्टापद पर्वत पर ऋषभनाथ स्वामी का बिंब दुर्लभ, द्युतिमय पाषाण से निर्मित है जो अन्धकार में भी प्रकाश बिखेरता हैं। इस पत्थर के छोटे खण्ड श्री अमितजी ने मुझे दिखाए थे जो अन्धकार में भी आलोकित होते थे।

द्युतिमय पाषाण से निर्मित आदिनाथ प्रभु की प्रतिमा

आचार्य महाप्रज्ञजी ने लिखा था जो अज्ञात होता है वह रहस्यमय है और ज्ञात होने पर भी सार्वजनिक रूप से जो प्रकाशमय नहीं होता वह भी रहस्यमय है। यही अष्टापद के विषय में कहा जा सकता है। आज जैन धर्म की प्राचीनता की प्रमाणिकता का महत्वपूर्ण स्रोत अष्टापद की खोज से स्थापित हो जाता है। जो सिर्फ जैन धर्म ही नहीं मानव सभ्यता और संस्कृति का आदि स्रोत भी है। क्योंकि विश्व की सभी संस्कृतियाँ, सभी प्राचीन परम्पराएँ यही से आरम्भ हुई थी। श्री अमित भाई से साक्षात्कार होना और उनसे अष्टापद के प्रमाण मिलना एक महत्वपूर्ण संयोग के साथ-साथ हमारी भावनाओं

की दृढ़ता, दृढ़ विश्वास और श्रद्धा परिणाम ही था कि अष्टापद जिसे हम लुप्त मान चुके थे, आदि संस्कृति की धरोहर के रूप में आज हमारे सामने उनके द्वारा दिये गये इन पुष्ट प्रमाणों से प्रत्यक्ष हो रहा है। इसके लिए श्री अमित दोसीजी का मैं बहुत-बहुत आभार प्रकट करती हूँ जिनके कारण लुप्त माना गया तीर्थ साक्षात् प्रत्यक्ष है। हमारे इस खोज के महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ श्री अमित भाईजी के योगदान का मूल्यांकन शब्दों की सीमा के बाहर हैं। पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ। इसके साथ-साथ अपने सभी सहयोगी जन जो अष्टापद रिचर्स फाउन्डेशन के द्वारा इस खोज में एक दूसरे से जुड़े जिनमें डॉ. रजनीकान्त शाह, श्री भरतभाई शाह, श्री जितेन्द्र बी. शाह, डॉ. पी.एस ठक्कर, डॉ. नरेन्द्र भण्डारी, डॉ. राजमलजी जैन एवं अर्चना पारेख। इन सभी के द्वारा दिए गए अमूल्य सहयोग के लिए आभार ज्ञापित करती हूँ और समस्त समाज से यह आशा करती हूँ कि आप सब आगे आये और अपना सहयोग दें जिससे भविष्य में आने वाली पीढ़ी को हम अपनी गौरवमय विरासत सौंप सके। अष्टापद की यह खोज अपनी संस्कृति के प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित करने और परम्परा के आदि स्रोत तक हमें पहुँचने में सहायक होगी इसी विश्वास के साथ—.

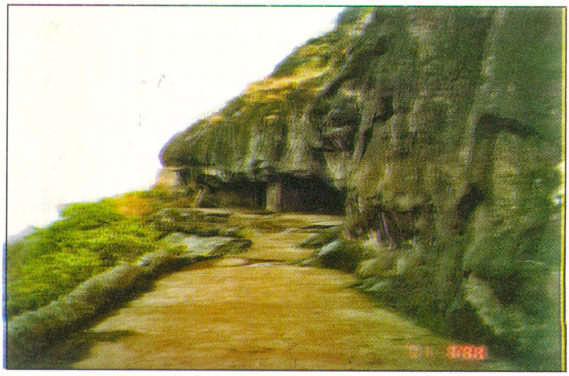

तथाकथित अष्टापद पहाड़ की गुम्फा

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. Bailey, F. M. - China, Tibet, Assam, Ruper Hart-Davis, 1957.
2. Blavatsky, H.P. - Isis Unveiled (1877) Theosophical Society Press, 1972
3. Bothra, Dr. Lata - An Analysis of the Historical Perspectives Depicting the Global Antiquity of Jainism, Kolkata, 2004.
4. Brunton, Paul - A Search In Secret India, Third Edition, 2003, Random House Group.
5. Hedin, Sven - Trans- Himalaya, (3 volumes) Macmillan 1909-1913.
6. Marshall, Sir John - Mohen-Jo-Daro and the Indus Valley Civilization, Vols, I-III London, 1931.
7. Nair, V.G - Research in Religion : Rule and Reform. Union of Universal Welfare, Adeeswara Bhavanam Poial-Red Hills Tamilnadu.
   - Adi Bhagawan Rishbha, Union of Universal Welfare, Adeeswara Bhavanam Poial-Red Hills, Tamilnadu 1970.
8. Rawling, C.G. - The Great Plateau, Arnold, 1905.
9. Roerich, N. - Shambhala : In search of the New Era, Rochester VE: Inner traditions
10. Shah, R. - Collection of Ashtapad material Vol. I-VII, New York, U.S.A., 2002-2004
11. Swami, Pranavananda - Exploration in Tibet, University of Calcutta, 1939.

12. Swinson, A - Beyond the Frontiers, biography of colonel F.M. Bailey, Hutchinson, 1971

13. Victoria, Le Page - Shambhala - The Fascinating truth behind the myth of Shangri-la Wheaton, IL : Quest P.P. 1-33.

14. Waller - The Pundits, British explorers of Tibet and Central Asia, University Press of Kentucky, 1990.

15. Ward, Michael - The Mountains of Central Tibet.

16. ओशो - धर्म का परम विज्ञान, आदर्श प्रिन्टर्स दिल्ली-32 1976

17. गोलालारे, लामचीदास - मेरी कैलाश यात्रा

18. बोथरा, डॉ. लता - आदिनाथ ऋषभदेव और अष्टापद, जैन भवन, कोलकाता - 700 007

19. महोपाध्याय, विनयसागर - गौतम रास : परिशीलन। प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

20. श्रीमाली, डॉ. नारायणदत्त - हिमालय के योगियों की गुप्त सिद्धियां, हिन्द पाकेट बुक्स जनवरी 2006.

पत्रिकाएँ

अर्हत् वचन् - संपा. डॉ. अनुपम जैन, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर - 452001, अक्टूबर-दिसम्बर 2003, अंक 4

ऋषभ सौरभ - संपा. डॉ. गोकुल प्रसाद जैन, ऋषभदेव प्रतिष्ठान, दिल्ली - 1992.

तित्थयर - संपा. डॉ. लता बोथरा, जैन भवन, कोलकाता - 700 007

तंत्र-मंत्र विज्ञान - जोधपुर।

Creators of Prestigious Interiors
Established 1970

Creativity is a Modern Religion

Nahar

Architects, Interiors, Consultants

5B, Indian Mirror Street, Kolkata-700 013
Phone : 2227-5240/45, Fax : 22276356
Email Id : info@nahardecor.com

Vol XXXVII No.08
25th Nov. 2013
TITTHAYARA
Postal Reg. No. KOL.RMS / 70/2013-15
R.N.I. 30181/77